डॉ. प्रमोद मीणा

हिंदी विभाग, भाषा एवं सामाजिक विज्ञान संकाय,
तेजपुर विश्वविद्यालय, असम

हिंदू प्रकाशन घर के रूप में (मारवाड़ी) गीता प्रेस का उभार

इस साल अपनी स्थापना का शताब्दी वर्ष मना रहे उत्तरप्रदेश के गोरखपुर से संचालित हिंदू धार्मिक पुस्तकों के प्रकाशक गीता प्रेस को साल 2021 के गांधी शांति पुरस्कार के लिए नामित किया जाना विवाद का विषय बन गया है। एक ओर केंद्र सरकार द्वारा इस पुरस्कार की घोषणा के साथ यह दावा किया गया है कि इस प्रकाशन संस्था ने अहिंसक गांधीवादी तौर-तरीकों से सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूपांतरण में अभूतपूर्व योगदान दिया है। दूसरी ओर गीता प्रेस को दिये जाने वाले इस पुरस्कार को लेकर सरकार पर तीखा हमला बोलते हुए कांग्रेस के वरिष्ठ नेता जयराम नरेश ने कहा कि यह निर्णय हास्यास्पद है और यह सावरकर और गोडसे को इस पुरस्कार से पुरस्कृत करने जैसा है। उन्होंने अक्षय मुकुल की पुस्तक 'गीता प्रेस एंड द मेकिंग ऑफ हिंदू इंडिया' के हवाले से गांधी जी के साथ इस संस्था के खराब रिश्ते का जिक्र करते हुए राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक आयामों पर इसे प्रतिगामी बताया। यहाँ उल्लेखनीय है कि गीता प्रेस से प्रकाशित कल्याण पत्रिका के संस्थापक संपादक हनुमान पोद्दार 1946 में गोरखपुर में हुए हिंदू महासभा के वार्षिक अधिवेशन के मुख्य आयोजकों में से एक थे। इतना ही नहीं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से संबद्ध माने जाने वाले नाथुराम विनायक गोडसे द्वारा की गई गांधी जी की हत्या के बाद कुछ समय के लिए पोद्दार को गिरफ्तार भी किया गया था क्योंकि तत्कालीन प्रतिबंधित दक्षिणपंथी संगठनों से उनके संबंध पाये गये थे।

वास्तव में 20वीं सदी के पूर्वार्द्ध में स्वाधीनता आंदोलन के समानांतर सुलग रही हिंदू-मुसलिम सांप्रदायिकता और जब-तब होने वाले दंगों में गीता प्रेस जैसा धार्मिक प्रकाशन तटस्थ नहीं रह सकता था। जहाँ एक ओर हिंदू-उर्दू के बीच की प्रतिस्पर्धा में गीता प्रेस हिंदी को हिंदुओं की भाषा बना देने वाली भाषाई संकीर्णता वाली मुहिम का हिस्सा था। वहीं गौ संरक्षण और शुद्धि जैसे सांप्रदयिक आंदोलनों में इसने वैचारिक स्तर पर योगदान दिया। मुसलिमों को हिंदू स्त्रियों के अपहरणकर्ता और बलात्कारी के रूप में पेश कर उनका चरित्रहनन करने से भी यह पीछे नहीं था। आज के भारत में भी धार्मिक राष्ट्रवाद से खुराक़ पा रहे सांप्रदायिक उन्माद हेतु गीता प्रेस के प्रकाशन एक पृष्ठभूमि का कार्य करते रहे हैं।

गाय के नाम पर होने वाली हिंसा हो या लव जिहाद की राजनीति हो, इनके पीछे जो ब्रेनवॉशिंग काम करती है, उसके लिए साहित्य प्रकाशन की दृष्टि से गीता प्रेस की भूमिका को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। गौ संरक्षण गीता प्रेस का एक घोषित लक्ष्य रहा है। अपनी पत्रिका 'कल्याण' में छपने वाले असंख्य लेखों के माध्यम से गीता प्रेस ने जहाँ गौ संरक्षण जैसे राजनीतिक मुद्दे को हवा दी, वहीं इस मुद्दे पर उसने दो पूरे के पूरे अंक तक प्रकाशित किये थे - गौ अंक और गौ सेवा अंक।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्व हिंदू परिषद और इनके विविध अनुषांगी संगठनों के साथ गीता प्रेस और उसके कर्ताधर्ताओं का घोषित-अघोषित संबंध रहा है। पॉल आर्नी अपने लेख 'गीता प्रेस एंड द मैगजीन कल्याण: द हिंदू इम्परेटिव ऑफ धर्म प्रचार' में दिखाते हैं कि बृहद जनसमूह तक पहुँचने के लिए गीता प्रेस छापेखाने की आधुनिक प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करने में सफल रहा और उसने अपने प्रकाशनों के द्वारा समांगी, लोकप्रिय, भक्ति उन्मुख ब्राह्मणवादी हिंदू धर्म को बढ़ावा दिया। इस धर्म प्रचार ने एक ओर धर्मशास्त्रीय मीमांसा को पल्लवित पोषित किया, वहीं दूसरी ओर सांप्रदायिक महत्वाकांक्षाओं को भी खाद-पानी प्रदान किया। इस संदर्भ में विश्व हिंदू परिषद द्वारा 1992 में गीता प्रेस के संस्थापक और कल्याण के पहले संपादक महावीर प्रसाद पोद्दार के सम्मान में अपने प्रकाशन हिंदू चेतना का जो विशेष अंक निकाला गया, वह ध्यातव्य है। इस अंक में शिवराम शंकर आप्टे द्वारा पोद्दार का लिया गया एक साक्षात्कार संकलित था। उस साक्षात्कार में पोद्दार स्वयं दावा करते हैं कि विश्व हिंदू परिषद का वैचारिक बीज गीता प्रेस ने ही बोया था।

एक ओर जहाँ गीता प्रेस पर दक्षिणपंथी अलगाववादी राजनीति को बढ़ावा देने के आरोप लगाये जाते हैं, वहीं दलित चिंतकों और साहित्यकारों द्वारा गीता प्रेस से प्रकाशित कल्याण पत्रिका और अन्य धार्मिक प्रकाशनों की इसलिए आलोचना की जाती है क्योंकि इनके द्वारा मनुवादी जातिवादी पूर्वाग्रहों को बढ़ावा दिया जाता है। मुसलिम सांप्रदायिक उभार का सामना करने के नाम पर व्यापक हिंदू एकता की बातें करने वाले गीता प्रेस और कल्याण का जाति व्यवस्था को लेकर रवैया बहुत ही जड़वादी रहा है। जिस सनातन हिंदू धर्म के रक्षक और प्रचारक की भूमिका गीता प्रेस ने अपनी स्थापना से लेकर आज तक अनवरत निभाई है, उस हिंदू धर्म के दरवाजे ऊपर के तीन वर्णों के लिए ही खुले थे। अक्षय मुकुल की पुस्तक दिखाती है कि न तो गांधी के अछूतोद्धार के लिए यहाँ कोई जगह रही है और न हिंदू वर्णाश्रम व्यवस्था विषयक अंबेडकर की आक्रामक आलोचना को लेकर किसी तरह की कोई सहिष्णुता ही यहाँ रही है। अछूतों को मनुष्य तक का दर्ज़ा न देने वाली हिंदू जाति व्यवस्था पर सवाल उठाने वाले और हिंदू स्त्रियों के अधिकारों के संरक्षण के लिए हिंदू कोड बिल लाने वाले अंबेडकर को जून 1948 के कल्याण में 'हीन जाति' का और बुढ़ापे

में एक ब्राह्मण स्त्री से विवाह करने वाला बताया गया। अंबेडकर द्वारा पेश हिंदू कोड बिल को 'हिंदू संस्कृति के विनाश का आयोजन' दिखाया गया। अंबेडकर के प्रति गीता प्रेस और कल्याण की इस नफरत के पीछे मनुवादी ब्राह्मण व्यवस्था की अंबेडकर द्वारा की गई कटु आलोचना तो थी ही किंतु साथ ही हिंदू स्त्री के प्रति गीता प्रेस की रुढ़ीवादी सामंती मानसिकता भी यहाँ काम कर रही थी। गीता प्रेस अपने धार्मिक प्रकाशनों और कल्याण के माध्यम से जिस आदर्श हिंदू स्त्री की छवि गढ़ता आया है, वहाँ स्त्री का दायरा घर की चार दीवारी तक सीमित है और पुरुष के प्रति उससे पूर्ण समर्पण की अपेक्षा रखी जाती है।

आज जिस सनातनी हिंदू धर्म के संरक्षक के रूप में गीता प्रेस दिखाई देता है, उसकी स्थापना के पीछे 20वीं सदी की शुरुआत में देश के अग्रणी व्यावसायिक समूह के रूप में स्थापित हो रहे मारवाड़ी समाज की पहचान के संकट को और हिंदू धर्म के क्षेत्र में उस वक्त चल रहे सुधारवादी और रुढ़ीवादी द्वंद्व को देखा जा सकता है। धार्मिक प्रकाशन के रूप में गीता प्रेस की स्थापना का मूल विचार जिस व्यक्ति का था, वह थे - बांकुर (बंगाल) के रहने वाले एक भ्रमणशील मारवाड़ी व्यवसायी जय दयाल गोयनका। अपनी व्यावसायिक यात्राओं के बीच गीता सत्संगों में डूबे रहने वाले गोयनका गीता का एक प्रामाणिक हिंदी संस्करण चाहते थे। गोरखपुर में रहने वाले अपने दूर के रिश्तेदार और मारवाड़ी व्यवसायी घनश्यामदास जालान की सलाह पर उन्होंने गोरखपुर में 1923 में गीता प्रेस प्रकाशन की स्थापना की, जिसे चलाने की जिम्मेदारी संयुक्त रूप से उठाई घनश्यामदास जालान और उनके व्यावसायिक सहयोगी महावीर प्रसाद पोद्दार ने। उस वक्त 600 रुपये में खरीदे गये हस्तचालित छापेखाने से गीता का पहला हिंदी अनुवाद अप्रैल 2023 में छापा गया था। तीन साल बाद घनश्यामदास बिरला की सलाह पर कल्याण पत्रिका का प्रकाशन शुरु हुआ था। गीता प्रेस और कल्याण पर गोयनका के संरक्षण में चलने वाली कलकत्ता की संस्था गोबिंद भवन कल्याण का समग्र नियंत्रण था।

यह भी याद रखना चाहिए कि गोयनका, जालान, पोद्दार और बिरला आदि ये मारवाड़ी व्यवसायी अग्रवाल मारवाड़ी महासभा से जुड़े हुये थे। मारवाड़ी समुदाय देश के विभिन्न हिस्सों में एक उभरती हुई आर्थिक शक्ति के रूप में अपने आपको स्थापित करने में लगा हुआ था और 20वीं सदी की शुरुआत तक वह इसमें काफी हद तक सफल भी हो चुका था किंतु अपनी आर्थिक ताकत के अनुरूप इस समुदाय को सामाजिक स्वीकार्यता प्राप्त न थी। अत: तमाम किस्म के छल-प्रपंच के लिए बदनाम यह समुदाय अपनी अनैतिक व्यावसायिक गतिविधियों पर अब आत्मालोचन के लिए बाध्य होने लगा था। इसके साथ-साथ आधुनिकता के चलते परंपरागत मारवाड़ी जीवन पद्धति और पारिवारिक-सामाजिक संरचना के लिए पैदा हो रही नई चुनौतियों से भी यह समुदाय जूझ रहा था। स्थानीय लोगों के आर्थिक शोषण पर टिकी मारवाड़ी

उद्यमशीलता से स्थानीय लोगों में असंतोष और ईर्ष्या स्वाभाविक थी। रूढ़ीवादी संस्कारों में डूबी इस समुदाय के लोगों की सादी जीवन शैली भी उपहास और मजाक का विषय थी। इन सब चीजों से उभरने और सामाजिक स्वीकार्यता के लिए मारवाड़ी समुदाय ने सामाजिक-धार्मिक विषयों पर उदारता और दानवीरता दिखाने की नीति पर अमल करना शुरु कर दिया। आधुनिक शिक्षा को प्रोत्साहित करने से लेकर सनातन हिंदू धर्म के रंग में स्वयं को रँगना आरंभ कर दिया। गौरक्षिणी सभाओं को बढ़-चढ़कर आर्थिक सहयोग देने वालों में मारवाड़ी सेठों का स्थान सबसे ऊपर था। जनकल्याण से जुड़ी संस्थाओं की स्थापना करने के साथ-साथ सनातन हिंदू धर्म की बेहतरी और अपनी सामुदायिक बुराइयों पर प्रकाश डालने के लिए आधुनिक छापेखाने की तकनीक के प्रयोग में भी यह समुदाय आगे बढ़ा। वेंकटेश्वर प्रेस (बंबई), राजस्थान समाचार (अजमेर) और मारवाड़ी गजट (कलकत्ता) आदि के साथ-साथ गीता प्रेस और कल्याण की स्थापना को भी इस परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए।

20वीं सदी की शुरुआत में धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में हिंदू सुधारवादियों और रूढ़ीवादियों के बीच जो तीखी बहस चल रही थी, उसके व्यापक दायरे में रखकर भी धार्मिक प्रकाशनघर के रूप में गीता प्रेस के जन्म और विकास को समझने की जरूरत है। ब्रह्म समाज और आर्य समाज जैसे सुधारवादी संगठनों और हिंदू महासभा और भारत धर्म महामंडल जैसे प्रतिक्रियावदी सनातनी संगठनों के बीच के झगड़े को सुलझाने और बीच का रास्ता निकालने में गीता प्रेस सफल रहा। विभिन्न हिंदू संगठनों और संप्रदायों के पारस्परिक वैचारिक मतभेदों पर स्वयं को केंद्रित करने की जगह समग्र हिंदू धर्मालंबियों तक पहुँचने के लिए इसने आम हिंदू की धार्मिक भावनाओं को संबोधित करने तक अपने को सीमित रखने की रणनीति पर काम किया। सुधारवादियों पर आक्रमण करने की रूढ़ीवादी संगठनों की नीति से दूरी रखते हुए इसने कोशिश की कि दोनों पक्षों को साथ लेकर चला जाए किंतु सांप्रदायिक मसलों पर विधर्मियों विशेषत: मुसलमानों के खिलाफ दुष्प्रचार की अपनी नीति पर इसने कभी कोई सामझौता नहीं किया।

गीता प्रेस प्रकाशन के दलित-स्त्री विरोधी रुख, राजनीतिक संकीर्णता और सांप्रदायिक ताकतों के साथ इसके गठजोड़ की आलोचना अपनी जगह है, किंतु प्रकाशन उद्योग की व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा के बीच सस्ते और गुणवत्तापूर्ण प्रकाशन का जो मॉडल इसने स्थापित किया है, वह अपने आप में अतुलनीय है। द हिंदू में छपे एक लेख के अनुसार गीता प्रेस का दावा है कि अपने जन्म से लेकर अब तक वह 1800 धार्मिक और आध्यात्मिक पुस्तकों और अन्य सामग्री की 910 मिलियन प्रतियाँ 15 भाषाओं में छाप चुका है। जिस श्रीमद् भगवद्गीता के प्रामाणिक अनुवाद के प्रकाशन का लक्ष्य लेकर इस प्रकाशनघर ने अपनी यात्रा आरंभ की थी, उसकी 162.1 मिलियन प्रतियाँ यह अब तक छाप चुका है।

पुराणों और उपनिषदों की बात करें तो यह 26.8 मिलियन प्रतियाँ उनकी छाप चुका है। गीता प्रेस वैसे तो 15 भाषाओं में प्रकाशन का दावा करता है किंतु इसका 41 प्रतिशत से ज्यादा प्रकाशन हिंदी में होता है। स्पष्ट है कि गीता प्रेस का लक्ष्य पाठक मूलत: हिंदी भाषाभाषी हिंदू धर्मालंबी है। तमिल, बांग्ला, तेलुगु, उड़िया और नेपाली के साथ अंग्रेजी में भी इसने ठीक-ठाक संख्या में पुस्तकें प्रकाशित की हैं। पुस्तकों के अतिरिक्त गीता प्रेस हिंदी में जिस कल्याण पत्रिका को मासिक निकालता है, उसकी

प्रसार संख्या दो लाख से ऊपर है जबकि उसके अंग्रेजी संस्करण कल्याण-कल्पतरु की एक लाख से ऊपर है। गीता प्रेस के प्रकाशन साम्राज्य का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि अकेले 2022-23 में ही इसने 111 करोड़ रुपये मूल्य की 24 मिलियन प्रतियाँ अपने विभिन्न प्रकाशनों की छापी है।

यह भी स्मरणीय है कि गीता प्रेस द्वारा प्रकाशित प्रकाशन चाहे कितने ही दकियानूसी विचारों वाले हों, किंतु छापेखाने और जनसंचार की आधुनिकतम वैज्ञानिक तकनीकों के इस्तेमाल में यह प्रकाशन शुरु से अग्रणी रहा है। इंटरनेट क्रांति के वर्तमान दौर के साथ कदमताल करते हुए गीता प्रेस अपने लोकप्रिय धार्मिक प्रकाशनों और पत्रिकाओं को ऑनलाइन उपलब्ध कराने की दिशा में अग्रसर है। गीता प्रेस की पुस्तकों को मोबाइल पर डाउनलोड करने और क्रय करने के लिए यह मोबाइल एप भी जल्द ही लाने जा रहा है।

एक भाषाभाषी जन समुदाय के निर्माण द्वारा राष्ट्रीय पहचान की स्थापना में जिस प्रिंट पूंजीवाद की भूमिका को बेनेडिक्ट एंडरसन ने रेखांकित किया है, कुछ बदले हुए आयामों के साथ गीता प्रेस के इस प्रकार के योगदान पर अक्षय मुकुल भी बल देते हैं। अपने किस्म के धार्मिक राष्ट्रवाद को प्रचारित-प्रसारित करते हुए भी मुनाफाधर्मिता से यह प्रकाशन उद्यम बचा रहा है। यह अपनी पत्रिकाओं में न तो विज्ञापन छापता है और न यह चंदा आदि स्वीकार करता है। गीता प्रेस के रूप में धार्मिक प्रकाशनघर की स्थापना में निवेश करने वाले मारवाड़ी व्यापारिक और औद्योगगिक पूँजीवाद से जुड़े हुए थे और मुनाफाधर्मी प्रवृत्ति के लिए वे आज भी दुनिया भर में जाने जाते हैं। अपने मुनाफाधर्मी पूँजीवादी संरक्षकों के बावजूद गीता प्रेस ने निजी आर्थिक हित से ऊपर उठकर अपने आपको धर्म प्रचार के स्वदेशी प्रकाशन उद्यम के रूप में स्थापित करने में सफलता हासिल की है। अस्तु, एक प्रकाशन उद्यम के रूप में गीता प्रेस को एक सिरे से खारिज़ करने की जगह जरूरत उन संभावनाओं को तलाशने की है कि उसके प्रकाशन मॉडल का इस्तेमाल प्रगतिशील मसलों पर जन चेतना के निर्माण में कैसे किया जा सकता है।